Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

# स्वामी दयानन्द सरस्वती का योगदान विचारों और क्रियाकलापों का विश्लेषण

**राकेश कुमार जीनगर** *

* सहायक आचार्य, आर एन टी कॉलेज कपासन, चित्तौडगढ़ (राज.) भारत

**शोध सारांश –** उन्नीसवीं सदी में हिन्दू समाज विभिन्न सामाजिक कुरीतियों से ग्रस्त था। जिनके कारण समाज नैतिक और सांस्कृतिक रूप से कमजोर पड़ रहा था। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने समाज में सुधार लाने और राष्ट्रीय भावना को जागृत करने में अहम भूमिका निभाई। उन्हें भारत में पुनरुत्थान आंदोलन का लूथर कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने लूथर के प्रसिद्ध आह्वान बाइबल की ओर लौटें की भांति वेदों की ओर लौटो का नारा दिया। स्वामी दयानन्द ने हिन्दू समाज को शुद्ध करने और अंधविश्वास की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए सक्रिय अभियान छेड़ा। उनके प्रयासों से स्थापित आर्य समाज एक प्रभावशाली सुधार आंदोलन बना। इससे पहले, ब्रह्म समाज नामक आंदोलन पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित एक रक्षात्मक प्रयास था, जो हिन्दू धर्म की मूल भावना को पूरी तरह संतुष्ट नहीं कर सका।

स्वामी दयानन्द सरस्वती के उग्र और साहसिक सुधारवादी दृष्टिकोण ने समाज को नया मार्गदर्शन दिया। उनके नेतृत्व में आर्य समाज का गठन हुआ, जिसने उन लोगों का विश्वास जीता जो पहले ब्रह्म समाज के प्रति शंकालु थे। स्वामी दयानन्द के विचारों का आधार प्राचीन भारतीय दर्शन और संस्कृति थी, जिसने समाज को अपनी जड़ों की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया।

**शब्द कुंजी –** पुनुरूत्थान, राष्ट्रवाद, पुनरूत्थान आंदोलन, ब्रह्म समाज, आर्य समाज, अंधविश्वास, पाश्चात्य संस्कृति।

**प्रस्तावना –** स्वामी दयानंद सरस्वती का जन्म 1824 ईस्वी में गुजरात के टंकारा कस्बे में हुआ, जो उस समय मोखी रियासत का हिस्सा था। उनका बचपन का नाम मूलशंकर था। उनके परिवार का संबंध एक पारंपरिक ब्राह्मण परिवार से था। उनके पिता भगवान शिव के भक्त थे और मूर्ति पूजा में गहरी आस्था रखते थे, जबकि उनकी माता वैष्णव परंपरा का पालन करती थीं और रूढ़िवादी विचारों वाली थीं। बचपन से ही मूलशंकर के मन में धर्म और आध्यात्म को लेकर गहरी जिज्ञासा थी।

स्वामी दयानंद सरस्वती को बचपन में ही अपने पिता से वैदिक कर्मकांड और न्याय दर्शन की शिक्षा मिली थी। लेकिन समय के साथ उनके मन में मूर्ति पूजा के प्रति असंतोष पैदा होने लगा। उन्हें लगा कि मूर्ति पूजा के माध्यम से ईश्वर की सच्ची आराधना संभव नहीं है। उनके मन में ईश्वर के स्वरूप, पूजा-पद्धति और धर्म के वास्तविक अर्थ को लेकर कई सवाल उठने लगे। इन सवालों के उत्तर जानने के लिए उन्होंने 1845 ईस्वी में घर छोड़ दिया।

इसके बाद स्वामी दयानंद ने लगभग 15 वर्षों तक भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया और अनेक विद्वानों व संतों से ज्ञान अर्जित किया। इस दौरान उन्होंने वेदों, उपनिषदों और अन्य शास्त्रों का गहन अध्ययन किया। 1860 ईस्वी में वे मथुरा पहुँचे, जहाँ उनकी भेंट स्वामी विरजानंद से हुई। स्वामी दयानंद ने उन्हें अपना गुरु बना लिया। गुरु विरजानंद के मार्गदर्शन में उन्होंने वेदों के वास्तविक अर्थ को समझा और वैदिक धर्म के प्रति उनकी आस्था और भी दृढ़ हो गई। गुरु विरजानंद के निर्देश पर ही स्वामी दयानंद ने समाज में फैले अंधविश्वास, रूढ़ियों और कुरीतियों के खिलाफ अभियान चलाने का निश्चय किया।

सन् 1863 में उन्होंने समाज में व्याप्त आडंबरों और कुरीतियों के विरोध में पाखंड खंडिनी पताका फहराई, जो उनके सुधारवादी आंदोलन की शुरुआत थी। उनका यह प्रयास 1875 ईस्वी में ठोस रूप में तब सामने आया जब उन्होंने मुंबई में 'आर्य समाज' की स्थापना की। आर्य समाज का उद्देश्य समाज में सत्य, धर्म और नैतिक मूल्यों को स्थापित करना था इसके बाद 1877 ईस्वी में लाहौर में आर्य समाज के सिद्धांत और नियम स्थापित किए गए, जो आज भी अपनी मूल भावना को बनाए हुए हैं।

**समीक्षा-साहित्य –** स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन, विचारों तथा सुधारवादी कार्यों पर अनेक विद्वानों ने शोध किया है। उनके चिंतन, सामाजिक सुधार और शैक्षिक योगदान का विश्लेषण निम्नलिखित प्रमुख पुस्तकों और शोधपत्रों में मिलता है –

1. 'राय लाला लाजपत (1915)' `Dayanand and the Arya Samaj', Longmans, Green & Co., London. , इस ग्रंथ में आर्य समाज की स्थापना, उद्देश्यों और राष्ट्रीय चेतना पर इसके प्रभाव का गहन विश्लेषण किया गया है। लेखक ने स्वामी दयानन्द को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत बताया है।
2. 'शर्मा रामनाथ'(1962)' `Swami Dayanand and His Age', वाराणसी : भारतीय विद्या प्रकाशन, इस पुस्तक में स्वामी दयानन्द के धार्मिक सुधारों, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण और सामाजिक जागरण में उनकी भूमिका का सम्यक विवेचन किया गया है।
3. 'शर्मा एस. आर.' (1970)' `Educational Philosophy of

Swami Dayanand Saraswati', `Indian Educational Review', Vol- 8] No. 2. , इस शोधपत्र में दयानन्द की शैक्षिक विचारधारा और आर्य समाज द्वारा स्थापित गुरुकुल प्रणाली का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

4. ' घोष के. सी.(1990)' `Swami Dayanand: The First Nationalist Thinker of Modern India', `Indian Historical Quarterly', Vol- 37., इसमें स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवादी विचारों को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की वैचारिक नींव के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

5. 'शर्मा मृदुला(2005)'- `Women Empowerment and Arya Samaj Reforms', `Indian Sociological Studies', Vol- 15] Issue 3.,इस शोधपत्र में आर्य समाज द्वारा महिला शिक्षा, विधवा पुनर्विवाह और लैंगिक समानता के लिए किए गए प्रयासों का विवेचन किया गया है।

6. 'मिश्र गोविन्द प्रसाद (2012)' 'आधुनिक भारत के सामाजिक सुधारक', दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।, इस ग्रंथ में स्वामी दयानन्द के सुधारवादी आंदोलनों को आधुनिक भारत के सामाजिक पुनर्जागरण की प्रमुख धारा बताया गया है।

7. 'गुप्ता, पी. (2023)' `Relevance of Swami Dayanand's Ideology in Contemporary India', `UGC Care Journal of Social Sciences', Vol- 45, Issue 2., इस नवीनतम शोधपत्र में आधुनिक भारत के संदर्भ में स्वामी दयानन्द के विचारों की स्थायी प्रासंगिकता को रेखांकित किया गया है।

साहित्य स्रोतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वामी दयानन्द सरस्वती न केवल एक धार्मिक सुधारक थे, बल्कि भारतीय समाज में नैतिकता, समानता और शिक्षा के पुनर्स्थापक भी रहे। उनके विचारों ने आधुनिक भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया।

**शोध के उद्देश्य:**

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन एवं उनके विचारों को जानना।
2. समाज और धर्म के क्षेत्र में स्वामी दयानन्द द्वारा किए गए सुधारात्मक प्रयासों को समझना।
3. उन्नीसवीं सदी के समाज पर स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के प्रभाव का अध्ययन करना।

**परिकल्पना :**

1. स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों ने उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज में व्याप्त अंधविश्वास, रूढ़ियों और कुरीतियों को चुनौती दी।
2. आर्य समाज की स्थापना ने भारतीय समाज में नैतिकता, समानता और वैदिक संस्कृति के पुनर्जागरण को प्रोत्साहन दिया।
3. स्वामी दयानन्द के सुधारवादी दृष्टिकोण ने भारतीय राष्ट्रवाद की नींव को मजबूत किया और स्वतंत्रता आंदोलन के लिए वैचारिक आधार प्रदान किया।
4. स्वामी दयानन्द के शैक्षिक और सामाजिक सुधारों ने भारतीय समाज को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया और स्त्री-शिक्षा तथा समान अधिकारों को बल दिया।

**शोध-प्रविधि –** यह शोध पत्र मुख्य रूप से ऐतिहासिक विश्लेषण और वर्णनात्मक दृष्टिकोण पर केंद्रित है। इसमें शोध विभिन्न महत्वपूर्ण पुस्तकों और ग्रंथों से एकत्रित किया गया है। वास्तव में, यह शोध पत्र पहले से उपलब्ध जानकारियों (द्वितीयक स्रोतों) पर आधारित है।

**आर्य समाज की स्थापना और उद्देश्य –** सन् 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य वैदिक संस्कृति और आर्य सभ्यता की श्रेष्ठता को स्थापित करना था। स्वामी दयानन्द का लक्ष्य समाज में नए राष्ट्रीय विचारों और उच्च नैतिक मूल्यों का प्रसार करना था। उन्होंने वेदों को परम ज्ञान का स्रोत माना और उन्हें भूत, वर्तमान तथा भविष्य के समस्त ज्ञान का आधार बताया।

स्वामी दयानन्द का मानना था कि वेद ईश्वर द्वारा प्रदान किया गया दिव्य ज्ञान है, और उन्होंने उपनिषद काल तक के साहित्य को स्वीकार किया। उन्होंने पुराणों को काल्पनिक मानते हुए उन्हें अस्वीकार किया तथा वेदों और उपनिषदों के अतिरिक्त सभी प्रकार के कर्मकांडों, परंपराओं और रीति-रिवाजों को त्यागने योग्य बताया। उनके अनुसार, ईश्वर सत्य, चेतना और आनंद का स्वरूप है। उन्होंने सदैव कर्मठ जीवन जीने का संदेश दिया और इस विचार पर जोर दिया कि मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है, न कि केवल भाग्य के भरोसे रहने वाला प्राणी। इन्हीं विश्वासों से प्रेरित होकर आर्य समाज ने उन मतों का कड़ा विरोध किया, जो हिन्दू धर्म का उपहास करते थे, विशेष रूप से ईसाई और इस्लाम धर्म प्रचारकों का। आर्य समाज की सफलता का एक बड़ा कारण उसकी धार्मिक दृढ़ता थी। यह संस्था न केवल हिन्दू समाज को एकजुट करने में सफल रही, बल्कि समाज में उच्च आदर्शों को स्थापित करने का माध्यम भी बनी।

**पाश्चात्य संस्कृति और अंधविश्वास के प्रति दृष्टिकोण –** स्वामी दयानन्द सरस्वती पश्चिमी संस्कृति के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने किसी भी अन्य धार्मिक अनुभव को नए उत्साह के साथ अपनाने का समर्थन नहीं किया, ने ही अन्य धर्मों के प्रति विशेष सहानुभूति दिखाई। उस समय भारतीय समाज में अंधविश्वास और कुरीतियाँ व्याप्त थीं, जिससे समाज में निराशा का माहौल बन गया था।

ईसाई धर्म के प्रचारकों द्वारा हिन्दू धर्म पर किए जा रहे कटाक्ष और आलोचनाओं के कारण धर्म के प्रति लोगों की आस्था कमजोर पड़ रही थी। इसी निराशाजनक वातावरण ने स्वामी दयानन्द को समाज में ऊर्जा और जागरूकता लाने के लिए प्रेरित किया।

**धार्मिक सुधार और तर्कशीलता का प्रचार –** धार्मिक क्षेत्र में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने मूर्ति पूजा, आडंबरपूर्ण कर्मकांड, बहुदेववाद, बलि प्रथा, यंत्र-मंत्र, स्वर्ग-नरक जैसी काल्पनिक अवधारणाओं और भाग्य के अंधविश्वास का विरोध किया। उन्होंने शिक्षित और अशिक्षित ब्राह्मणों में व्याप्त अज्ञानता, रूढ़िवादिता, संकीर्ण सोच और परंपराओं पर आधारित कार्यों का भी कड़ा विरोध किया।

स्वामी दयानन्द ने केवल प्राचीन संस्कृति के पुनर्स्थापक थे, बल्कि एक साहसी और प्रभावशाली समाज सुधारक भी थे। उन्होंने अपने देशवासियों के चरित्र में व्याप्त अनेक दोषों की कठोर आलोचना की। अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में उन्होंने स्वीकार किया कि भारत की पराधीनता का मुख्य कारण यहाँ का जर्जर समाज ही था।

**सामाजिक सुधार और समानता की स्थापना –** स्वामी दयानन्द का उद्देश्य भारत को सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय रूप से एकजुट करना था। आर्य समाज का गठन सामाजिक क्षेत्र में क्रांतिकारी विचारधारा से प्रेरित था। उन्होंने बाल विवाह, बहुविवाह, पर्दा प्रथा, जातिवाद, छुआछूत और

पुरोहितवाद जैसी कुप्रथाओं का पुरजोर विरोध किया।

आर्य समाज के माध्यम से उन्होंने जिस सामाजिक जागरूकता को जन्म दिया, वह हिन्दू समाज के इतिहास में अद्वितीय रही। वे पहले ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने स्त्रियों और शूद्रों को वेद अध्ययन, उच्च शिक्षा प्राप्त करने और अन्य सामाजिक अधिकारों में ऊँची जातियों के समान अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने स्त्री–पुरुष समानता का समर्थन किया तथा बाल विधवाओं की दयनीय स्थिति देखकर सुधार की दिशा में कदम बढ़ाए।

**जातिवाद और छुआछूत के विरुद्ध संघर्ष –** स्वामी दयानन्द सरस्वती जातिवाद और इससे जुड़ी सभी सामाजिक कुरीतियों के प्रबल विरोधी थे। उनका मानना था कि वैदिक काल में जाति का निर्धारण व्यक्ति के कर्म और गुणों के आधार पर होता था, लेकिन समय के साथ यह व्यवस्था विकृत रूप ले चुकी थी और जन्म आधारित प्रणाली में परिवर्तित हो गई।

अपनी पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' में उन्होंने लिखा कि जो व्यक्ति जन्म से ब्राह्मण हैं और सद्गुणों व श्रेष्ठ कर्मों का पालन करते हैं, वे ही सच्चे ब्राह्मण हैं। इसी प्रकार, जो शूद्र भी उत्तम आचरण और कार्यों को अपनाते हैं, वे भी उच्च वर्ण के माने जाने चाहिए। इस प्रकार उन्होंने यह स्पष्ट किया कि व्यक्ति की योग्यता और कर्म के आधार पर ही उसका वर्ण निर्धारित होना चाहिए। स्वामी दयानन्द ने चार वर्णों कृ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र को स्वीकार किया, लेकिन किसी को भी अस्पृश्य नहीं माना। उन्होंने छुआछूत को अमानवीय प्रथा और वैदिक धर्म पर लगा कलंक कहा। उनका मानना था कि छुआछूत का संबंध न तो जन्म से है और न ही धर्म से। उनके अनुसार, वास्तविक अछूत वह व्यक्ति है जो अस्वच्छता और आलस्य का प्रतीक हो।

**राष्ट्रवाद और स्वराज की अवधारणा –** स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज में भाईचारे और समानता की भावना को प्रबल किया, जिसकी झलक आज के भारतीय संविधान में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने 'स्वराज' शब्द का प्रयोग किया और विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार तथा स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर जोर दिया। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने की पहल भी सर्वप्रथम स्वामी दयानन्द ने ही की थी। उनके विचारों से प्रभावित होकर बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, बिपिन चंद्र पाल और अरविंद घोष जैसे नेताओं ने राष्ट्रीय आंदोलन को सशक्त दिशा दी।

**शिक्षा, ज्ञान और आर्य समाज की संस्थाएँ –** आर्य समाज ने शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में भी अहम भूमिका निभाई। स्वामी दयानन्द के निधन के बाद वैदिक शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से देशभर में 'गुरुकुल' और 'कन्या गुरुकुल' की स्थापना की गई।

आधुनिक शिक्षा को अपनाते हुए डी.ए.वी. स्कूल और डी.ए.वी. कॉलेज जैसे शैक्षणिक संस्थान स्थापित किए गए, जिससे शिक्षा का व्यापक प्रसार हुआ। आर्य समाज ने 'शुद्धि आंदोलन' भी आरंभ किया, जिसके माध्यम से उन हिन्दुओं को पुन: अपने धर्म में लौटाया गया जिन्होंने अन्य धर्म स्वीकार कर लिया था। इस आंदोलन ने समाज को एकजुट करने और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

**निष्कर्ष –** स्वामी दयानन्द सरस्वती ने धर्म, समाज, शिक्षा और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में अमूल्य योगदान दिया। उन्होंने समाज के हर वर्ग, विशेषकर वंचित और पिछड़े तबकों तक अपने विचार पहुंचाए, जिससे उनका संदेश आज भी प्रेरणादायक बना हुआ है। स्वामी दयानन्द ने भारतीय समाज को अंधविश्वास, रूढ़ियों और कुरीतियों से मुक्त करने के लिए अथक प्रयास किए। उन्होंने जातिवाद, अशिक्षा और सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई और शिक्षा के प्रसार पर बल दिया।

स्वामी दयानन्द ने एक प्रगतिशील भारत का सपना देखा, जिसमें समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे की भावना स्थापित हो। उनकी शिक्षा संबंधी सुधार न केवल तत्कालीन समाज में बदलाव लाए बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी मार्गदर्शक बने। सामाजिक सुधार के प्रति उनके विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उस समय थे। भारत को आज भी ऐसे ही क्रांतिकारी विचारकों और समाज सुधारकों की आवश्यकता है, जो समाज में समानता, सद्भाव और शांति का वातावरण स्थापित कर सकें। स्वामी दयानन्द का जीवन और उनके आदर्श हमें प्रेरणा देते हैं कि सही सोच और कर्म के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :–**

1. सिन्हल, मीनू. स्वामी दयानन्द सरस्वती. डायमंड पॉकेट बुक्स दिल्ली, 2005
2. पाण्डे, धनपती. स्वामी दयानन्द सरस्वती. नेशनल पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 1985
3. परूथी, आर. के. आर्य समाज और भारतीय सभ्यता. सुभाष पब्लिकेशन बेंगलुरु, 2003
4. सरस्वती, स्वामी दयानन्द. सत्यार्थ प्रकाश. आर्य प्रकाशन ट्रस्ट, नई दिल्ली (आधुनिक संस्करण उपलब्ध)।
5. शुक्ल, रामगोपाल. वैदिक धर्म और आर्य समाज. आर्य साहित्य ट्रस्ट, 1992
6. वेदालंकार, रामनाथ. स्वराज और स्वामी दयानन्द. भारतीय विद्या भवन मुंबई, 1970
7. चतुर्वेदी, श्याम सुंदर. भारत के पुनर्जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, 1995
8. जोशी, लक्ष्मीनारायण. आर्य समाज का इतिहास. गोपालजी पब्लिकेशन हैदराबाद, 1998
9. शर्मा, अशोक कुमार. महान समाज सुधारक स्वामी दयानन्द. हिंदुस्तान पब्लिकेशन दिल्ली, 2006

**********